[स्थापित : १९६२]
गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स
आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर (उ०प्र०)

संस्थान : भौगोलिक अवस्थिति एवं प्राकृतिक परिवेश :

गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स, आरोग्य मंदिर, गोरखपुर भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है।

उत्तर प्रदेश भारत के सीमान्त प्रदेशों में से एक है। इसकी उत्तरी सीमा हिमालय पर्वत-शृंखला से लगी हुई, तिब्बत और नेपाल (सीमा १०० कि०मी०) को छूती है। इसकी पश्चिमी और दक्षिण-पश्चिमी सीमा पर हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली और राजस्थान हैं, दक्षिण में यह मध्य प्रदेश और इसकी पूर्व और पूर्वोत्तर सीमा बिहार से संलग्न है। गोरखपुर शहर उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्से में है और यह पूर्वांचल का मुख्य भाग तथा पूर्वोत्तर रेलवे का मुख्यालय है। इसके पश्चिम में प्रसिद्ध तीर्थ अयोध्या (फैजाबाद) १४० कि०मी० पर तथा दक्षिण व दक्षिण-पूर्व में विश्व के प्राचीनतम नगरों में एक काशी (वाराणसी) २०० कि०मी० की दूरी पर है।

भारतवर्ष के इतिहास में गोरखपुर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। नगर के पश्चिम में रोहिणी व राप्ती नदियों के संगम पर ही राजकीय वस्त्र व प्रतीक त्याग कर राजकुमार सिद्धार्थ सत्य की खोज में निकल पड़े थे। शाक्य वंश के राजाओं की राजधानी कपिलवस्तु (अब पिपरहवा) गोरखपुर के उत्तर में, १३० कि०मी० पर, नेपाल में है। यहीं लुम्बिनी के साल वनों में भगवान् बुद्ध का अवतरण हुआ था। गौतम बुद्ध का परिनिर्वाण-स्थल कशूशरा (पूर्व कुशीनारा, अब कुशीनगर) यहां से ४५ कि०मी० की दूरी पर है। सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म भी यहीं पिप्पलीवन में हुआ था, जो गोरखपुर जिले के कुसुम्ही रेलवे स्टेशन के निकट है।

प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम (सन् १८५७) के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर की सेन्ट्रल जेल में फांसी दी गयी थी। ऐतिहासिक चौरी-चौरा (गोरखपुर से दूरी ३० कि०मी०) आन्दोलन यहीं पर हुआ। महायोगी गुरु गोरक्षनाथ (जिनके नाम पर गोरखपुर शहर का नामकरण किया गया) तथा संत कबीर की वाणी भी पहले इसी क्षेत्र में गूंजी। संत कबीर की समाधि (निर्वाण-स्थली), मगहर यहां से २० कि०मी० की दूरी पर है। उर्दू के सुप्रसिद्ध शायर श्री रघुपति सहाय ''फिराक'' की जन्मभूमि भी गोरखपुर ही है। उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द का भी गोरखपुर से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।

आरोग्य मंदिर, गोरखपुर रेलवे स्टेशन से पाँच किलोमीटर की दूरी पर, बाबा राघव दास मेडिकल कालेज रोड पर, आम बाजार एवं राप्तीनगर के निकट, एक सुरम्य क्षेत्र में अवस्थित है। आरोग्य मंदिर की स्थापना सन् १९४० में हुई थी। इसकी नयी, भव्य और विशाल इमारत सन् १९६१ में बनी। यह ऊँचाई पर और खुला हुआ स्थान है। इसके आस-पास प्रदूषण-निवारणमें सहायक सागौन, अशोक आदि के बहुतेरे पेड़ हैं। भवन के सामने सुन्दर, सुगन्धित पुष्पों का उद्यान है।

प्रस्तावना :

सन् १९५५ में ही यहां प्राकृतिक-चिकित्सा का शिक्षण शुरू किया गया था। शिक्षण-काल दो वर्ष का रखा गया और शिक्षणालय में नामांकन के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता थी उस समय का एफ०एस-सी० अर्थात् इस समय का इंटरमीडिएट (विज्ञान)। लेकिन, उस समय वैसे पांच विद्यार्थी भी नहीं मिले, फलस्वरूप शिक्षणालय शुरू नहीं किया जा सका। वस्तुत: चिकित्सा को जीविकोपार्जन का निश्चित जरिया न समझने की वजह से, प्राकृतिक-चिकित्सा को अपनाने में भारतीय युवकों और युवतियों का संकोच इसका मुख्य कारण रहा। लेकिन, सात वर्षों के बाद, सन् १९६२ में, **गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स** की स्थापना की गयी। विधिवत् दो वर्ष का कोर्स शुरू किया जाये, इससे पहले प्राकृतिक चिकित्सा-शिक्षण का पत्राचार-पाठ्यक्रम शुरू किया गया। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को निर्धारित पुस्तकों का अध्यन अपने घरों पर ही, हमारे निर्देशन में स्वयं करना है। और, एक वर्ष के बाद प्राकृतिक-चिकित्सा के व्यावहारिक ज्ञान-हेतु, दो मास के लिए, उन्हें आरोग्य मंदिर, गोरखपुर आना है।

दो मास के बाद परीक्षा लेने का सिलसिला तो पहले से जारी है ही, पर, अब प्रति सप्ताह चयनात्मक अथवा वस्तुनिष्ठ (आब्जेक्टिव) परीक्षा भी शुरू कर दी गयी है, जिसकी वजह से अब यहां विद्यार्थी प्रतिदिन दो घंटे की व्याख्यान-कक्षा में शामिल होने के अलावा, जब भी समय मिलता है, रोज जरूर पढ़ते हैं। इस परीक्षा ने एक और काम किया है। यह विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना भर देती है। अत:, शुरू से ही वे विशेष विद्यार्थी नजर में आ जाते हैं, फलत: नये प्राकृतिक-चिकित्सालयों द्वारा चिकित्सक की मांग की जाने पर उनके नाम अनुशंसित एवं अग्रसारित कर दिये जाते हैं। पर, हमारे प्रस्ताव सभी स्वीकार नहीं करते और वे स्वयं अपने बल पर चिकित्सा करने को अधिक महत्त्व देते हैं, क्योंकि वे जान जाते हैं कि मात्र चिकित्सालय में ही चिकित्सा नहीं होती, रोगी के घर पर भी हो सकती है। इस तरह वे चिकित्सा को चिकित्सालय से अलग, घर-घर की चीज बना देते हैं।

हमें प्रसन्नता है कि हमारी शिक्षा-विधि अनेक संस्थाओं के लिए आदर्श साबित हुई है, क्योंकि जब हम व्यावहारिक ज्ञान देते हैं, तब हम प्रशिक्षार्थी को यह भी सिखाते हैं कि रोगियों को किस तरह सम्भाला जाता है, साथ-ही-साथ, उन्हें उनकी रुचियों को पढ़ने के लिऐ प्रेरित किया जाता है। जहां अन्य शिक्षण-संस्थानों में शिक्षा लेने वाले विद्यार्थी प्राय: अनुशासनहीन हो रहे हैं, वहां हमारे विद्यार्थी अनुशासित, सुसंस्कृत एवं विनम्र होते हैं और अपने शिक्षकों के प्रति श्रद्धा-विश्वास रखकर शिक्षा ग्रहण करते हैं।

प्राकृतिक-चिकित्सा की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर **एन०डी० (डाक्टर ऑव नेचुरोपैथी)** का सर्टिफिकेट दिया जायेगा और योग की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर **वाई०डी० (डाक्टर ऑव योगा)** का सर्टिफिकेट। व्यावहारिक ज्ञान विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त अनिवार्य है। इस अवधि में विद्यार्थी आरोग्य मंदिर में चिकित्सा के लिए दाखिल, विभिन्न रोगों से पीड़ित, लगभग सौ-सवा सौ नये-पुराने रोगियों की चिकित्सा होते देख सकेंगे जिसके बाद ही वे किसी भी रोगी की चिकित्सा का कार्य निश्शंक एवं आत्मविश्वस्त होकर कर सकेंगे। उल्लेखनीय है कि आरोग्य मंदिर में लगभग सौ-सवा सौ रोगी, चिकित्सार्थ, बराबर रहते हैं।

नामांकन-प्रक्रिया :

विद्यार्थी कभी भी नामांकन करा सकते हैं, लेकिन उन्हें व्यावहारिक ज्ञान का अवसर एक साल या उससे अधिक समय बाद ही मिल सकेगा।

नामांकन के लिए न्यूनतम आवश्यक अर्हताएं : बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण या समकक्ष योग्यता (शारीरिक एवं मानसिक) अच्छा स्वास्थ्य, हिन्दी का ज्ञान अच्छी आदतें एवं अच्छा चरित्र। न्यूनतम उम्र २० वर्ष।

व्यावहारिक ज्ञान प्रत्येक वर्ष जनवरी-फरवरी में दिया जायेगा। जनवरी के दूसरे सप्ताह से पांच सप्ताह तक, प्रत्येक सप्ताह, चयनात्मक अथवा वस्तुनिष्ठ (आब्जेक्टिव) परीक्षा होगी। २३, २४ और २५ फरवरी को मौखिक परीक्षा तथा २६, २७ और २८ फरवरी को लिखित परीक्षा हुआ करेगी। ये नियम किसी भी स्थिति में परिवर्तनीय नहीं हैं।

पाठ्यक्रम :

विद्यार्थियों को प्राकृतिक-चिकित्सा का सर्वांगीण ज्ञान मिले, इस दृष्टि से निम्नलिखित पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है-

१. प्राकृतिक-चिकित्सा का इतिहास -

भारत तथा पश्चिमी देशों में प्राकृतिक-चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास।

भारत के प्रमुख प्राकृतिक-चिकित्सकों का संक्षिप्त परिचय - (डा० वी० कृष्णम् राजू, डा० लक्ष्मण शर्मा, आचार्य बालकोवा भावे, डा० बालेश्वर प्रसाद सिंह, डा० जानकी शरण वर्मा, डा० महावीर प्रसाद पोद्दार, डा० विट्ठलदास मोदी, डा० कुलरंजन मुखर्जी, डा० एस०जे० सिंह, डा० बी० वेंकट राव, डा० विजय लक्ष्मी, डा० गंगा प्रसाद गौड़ 'नाहर', डा० उमा जिन्दल, डा० रवीन्द्र चौधरी, स्वामी साधनानन्द)।

पश्चिमी देशों के प्रमुख प्राकृतिक-चिकित्सक एवं उनका चिकित्सा-दर्शन :

(विंसेज प्रिसनिज, जेम्स सी० जैक्सन, जोहन्स स्क्राथ, फादर क्नाइप, अर्नाल्ड रिक्ली, प्रो० एफ०ई० विल्ड, लुई कूने, हैनरिच लेमैन, एडोल्फ जस्ट, अर्नाल्ड इहरिट, जे०एच० टिल्डेन, बेनडिक्ट लस्ट, हैरी बेंजामिन, स्टेनले लीफ, बर्नर मैकफेडेन, रसेल ट्राल, जे०एच० केल्लाग, हेनरी लिंडल्हार, डा० शेल्टन)।

प्राकृतिक चिकित्सा का मूलभूत सिद्धान्त, नैसर्गिक आरोग्य।

शरीर-शास्त्र -

प्राकृतिक-चिकित्सा व योग के संदर्भ में शरीर-रचना विज्ञान के अध्ययन का महत्त्व।

सजीवों के लक्षण।

शरीर रचना-सदृश्य शब्दावली।

कोशिका की संरचना, ऊतकों के प्रकार, मानव-शरीर की विभिन्न प्रणालियां।

कंकालतंत्र - (अ) अस्थियां- अस्थियों के प्रकार (ब) शरीर में पायी जाने वाली विभिन्न अस्थियों का विवरण

पेशीय तंत्र - पेशियों के प्रकार - शीर्ष, चेहरे व ग्रीवा, उदर, वक्ष, श्रोणि, पीठ व स्कन्ध-मेखला, अग्रबाहु, हाथ, जांघ, प्रजंघिका की पेशियों का उद्गम, निवेशन का प्रारम्भिक ज्ञान।

सन्धि संस्थान - वर्गीकरण - विभिन्न चल, अल्पचल व अचल संधियों का सरल विवरण।

परिसंचरण तंत्र - रक्त की रचना- रक्त-वहिकाएं, रक्त-वाहिनियाँ तथा हृदय की संरचना का प्रारम्भिक ज्ञान।

लसिका-तंत्र - लसिका की संरचना, लसिका-वाहिनी व लसिका-पर्व।

पाचन-तंत्र - पाचन-तंत्र के विभिन्न अंगों की संरचना एवं शारीरिक अवस्थिति।

श्वसन-तंत्र - फेफड़ा, श्वास-नली, श्वसनी व वायुकोष की संरचना की प्रारंभिक ज्ञान।

उत्सर्जन-तंत्र - मूत्रीय संस्थान के विभिन्न अंगों की शारीरिक अवस्थिति तथा वृक्क, वृक्काणु की संरचना का सामान्य ज्ञान, त्वचा की रचना।

प्रजनन-तंत्र - तंत्रिका-तंत्र के भाग, केन्द्रीय व परिसरीय तंत्रिका-तंत्र, मस्तिष्क का आवरण, मस्तिष्क व प्रमस्तिष्क के खण्डों की रचना व अवस्थिति, सुषुम्ना तंत्रिकाओं की रचना व स्वायत्त तंत्रिका-तंत्र का प्रारम्भिक ज्ञान।

अन्त:स्रावी तंत्र - विभिन्न अंत:स्रावी ग्रंथियों, यथा-पीयूष, अवटुका, परावटुका, अधिवृक्क, बालग्रंथि, अंड व डिम्ब-ग्रंथि की शरीर में स्थिति व संरचना का सामान्य ज्ञान।

विशेष संवेदी ज्ञानेन्द्रियां- आंख, नाक एवं कान की संरचना।

(ख) शरीर-क्रिया-विज्ञान -

मानव-शरीर-क्रिया-विज्ञान का परिचय, परिभाषा एवं कार्य-प्रणाली का प्रारंभिक अध्ययन।

कोशिका, ऊतक, अंग व प्रणालियां।

कंकाल-तंत्र, संधि-संस्थान तथा पेशीय तंत्र की कार्य-प्रणालियों का सामान्य ज्ञान।

परिसंचरण-तंत्र - रक्त-समूह, रक्त के कार्य, रक्त की रचना, टी०एल०सी०, डी०एल०सी०, ई०एस०आर०, रक्त की जांच, सामान्य माप तथा रोगों की पहचान, रक्तचाप, नाड़ी-गति, दैहिक व फुफ्फुसीय रक्त-परिसंचरण, प्रतिहारी निवाहिका परिसंचरण, हृत्कार्य-चक्र।

पाचन-तंत्र - पाचन-तंत्र की सामान्य कार्यप्रणाली, पाचन-क्रिया व इसमें सहायक विभिन्न पाचक रसों के उद्गम-स्थल व कार्य।

श्वसन-तंत्र - श्वसन-पथ व श्वसन की क्रियाविधि, श्वासधारिता, श्वसन-दर।

उत्सर्जन-तंत्र - मूत्रीय संस्थान की कार्य-प्रणाली, वृक्क की कार्य-प्रणाली एवं मूत्र-विसर्जन, त्वचा के कार्य।

प्रजनन-तंत्र -

पुरुष-प्रजनन-तंत्र व इसके विभिन्न अंगों की कार्य-प्रणाली, शुक्राणु-निर्माण-प्रक्रिया।

स्त्री-प्रजनन-तंत्र, गर्भाशय व डिम्बग्रंथियों की कार्य-प्रणाली, डिम्ब-निर्माण व डिम्बग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोनों के कार्य, मासिक धर्म-चक्र, रजोनिवृत्ति, निषेचन।

तंत्रिका-तंत्र - केन्द्रीय तंत्रिका-तंत्र की कार्य-विधि का सामान्य ज्ञान, प्रमस्तिष्क के कार्य, सुषुम्ना में संवेदी तथा प्रेरक तंत्रिका-पथ, एच्छिक व अनैच्छिक पेशीय गति, प्रतिवर्ती क्रिया का प्रारम्भिक ज्ञान, परिसरीय तंत्रिका-तंत्र की विभिन्न तंत्रिकाओं के कार्य, सुषुम्ना-तंत्रिकाओं के कार्य, स्वायत्त तंत्रिका-तंत्र, अनुकम्पी व परानुकम्पी तंत्रिका-तंत्र की क्रिया-विधि का प्रारम्भिक ज्ञान।

अन्त:स्रावी तंत्र - पीयूष, अवटुका, परावटुका, अधिवृक्क, बाल ग्रन्थि, क्लोम, अंड व डिम्ब-ग्रंथियों की कार्य-प्रणाली व इनसे निकलने वाले हार्मोनों के कार्यों का सामान्य अध्ययन।

विशेष संवेदी अंग - नेत्रों तथा श्रेवणेन्द्रिय की क्रिया-विधि का प्रारम्भिक ज्ञान।

निदान -

प्राकृतिक-चिकित्सा में निदान का महत्त्व एवं इसकी उपयोगिता, आकृति से रोग निदान का महत्त्व, दोष-संचय के सिद्धान्त, कारण, शरीर में दोष-संचय के विभिन्न स्थान व इनसे उत्पन्न होनेवाले रोग। अग्र-संचय, पार्श्व-संचय, वाम व दक्षिण संचय, मिश्रित संचय, मुखाकृति-विज्ञान द्वारा भीतरी अवयवों के रोगों की पहचान।

भोजनशास्त्र तथा उपवास-चिकित्सा -

प्राकृतिक-चिकित्सा में आहार का महत्त्व, स्वास्थ्य का आधार-प्राकृतिक आहार, आहार के विभिन्न तत्त्वों (कार्बोज, प्रोटीन, वसा, विटामिन, मिनरल्स, एंटी-आक्सीडेन्ट आदि) का वर्गीकरण व इनका संयोजन, अम्लीय व क्षारीय आहार। संतुलित आहार, अपक्वाहार, तरकारियों का महत्त्व,

सामान्य व विशेष रोगों में आहार, कच्चे भोजन की सूची, कच्चा भोजन लेने की सहायक विधियां, प्राकृतिक-चिकित्सा में उपवास की उपयोगिता, प्रकार, उपवास-चिकित्सा-विधि व इसका शारीरिक व मानसिक प्रभाव, तीव्र व जीर्ण रोगों में उपवास, उपवास और भुखमरी। उपवास तोड़ने की विधि। कल्प का महत्त्व व रोग-निवारण में इसकी उपादेयता, दुग्ध-कल्प व मठा-कल्प की विधि।

जलोपचार -

जलोपचार का इतिहास व सिद्धान्त, जल के भौतिक गुण, जलोपचार की शारीरिक क्रिया-प्रतिक्रिया, गर्म व ठंडे जल के प्रयोग व इसकी क्रिया-प्रतिक्रिया, जल-चिकित्सा के विभिन्न प्रयोग, एनिमा, पेट की गर्म ठंडी सेंक, गर्म-ठंडा कटि-स्नान, भाप-नहान, पैर का गरम नहान, सारे बदन की गीली पट्टी, अर्ध एवं पूर्ण प्रक्षालन, स्नान की विधियां, रीढ़ स्नान, उष्ण स्नान, जल-चिकित्सा को प्रभावी एवं निष्प्रभावी बनाने वाले कारक।

मालिश, व्यायाम तथा योगासन -

मालिश का इतिहास, उपयोगिता एवं विशेषताएं, मालिश के प्रकार, तेलमालिश, सूखी मालिश, पावडर की मालिश, गर्म व ठंडी मालिश, वैज्ञानिक मालिश की विधि, विभिन्न अंगों पर मालिश की तकनीक तथा प्रभाव, रोगों में मालिश की तकनीक, प्रभाव, तेल का प्रयोग, मालिश लेने व मालिश करने वाले के विशेष लक्षण व सावधानियां।

विभिन्न व्यायाम-पद्धतियाँ, देशी व विदेशी व्यायाम, यौगिक व्यायाम, कसरत और आसन में अन्तर, आसनों की उपयोगिता, लाभ व सावधानियां। युवक, युवती एवं प्रौढ़ के लिए तथा प्रसवपूर्व और प्रसवोपरान्त उपयोगी आसन।

आसनों के प्रकार - ध्यानात्मक आसन (सुखासन, स्वस्तिकासन, पद्मासन आदि) तथा उपचारात्मक आसन (पवनमुक्तासन-शृंखला, वज्रासन, सुप्त वज्रासन, शशांकासन, मार्जारी आसन, व्याघ्र आसन, उष्ट्रासन, वक्रासन, अर्ध मत्स्येन्द्रासन, योगमुद्रा, ताड़ासन, त्रिकोणासन, गरुड़ासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, चक्रासन, सर्वांगासन, शीर्षासन, हलासन, मत्स्यासन आदि)।

शिथिलीकरण के आसन- मकरासन, अध्वासन, ज्येष्टिकासन, शवासन, योगनिद्रा।

सूर्य-नमस्कार की विधि, लाभ व सावधानियां।

प्राणायाम तथा श्वसन में अन्तर, प्राणायाम के प्रकार- शीतली, शीतकारी, भस्त्रिका, कपालभाति, नाड़ी-शोधन, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, मूर्च्छा, प्लावनी, प्राणवायु, पंच प्राण।

यौगिक षट्कर्म - नेति, धौति, कपालभाति, त्राटक, नौलि, वस्ति। अर्ध तथा पूर्ण शंख-प्रक्षालन की विधि, लाभ तथा सावधानियाँ।

यौगिक चक्र कुण्डलिनी मुद्राएं तथा बन्ध।

सूर्य और मृत्तिका (मिट्टी) चिकित्सा -

मृत्तिका-चिकित्सा का इतिहास, मिट्टी के प्रकार व विशेषताएं, मिट्टी तैयार करने की विधि, मिट्टी की पट्टी बनाने की विधि, अंग-विशेष पर मिट्टी की पुल्टिस, सर्वांग मिट्टी लेप, मृत्तिका-चिकित्सा के लाभ व सावधानियाँ, रश्मि-किरण-चिकित्सा का सिद्धान्त, रंगों का संयोजन, रंगों के प्रभाव, रंग-चिकित्सा की विधियाँ, धूप-नहान की विधि, लाभ व सावधानियाँ।

मानसोपचार-

सम्पूर्ण स्वास्थ्य की दृष्टि से मानसिक स्वास्थ्य का महत्त्व, मनोदैहिक रोगों का सिद्धान्त, शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करनेवाले कारक, मनोदशा व विचारों का स्वास्थ्य पर प्रभाव, मन के दोष, विषय व कर्म, यथा-अन्न तथा मन, मानसिक रोग व उनका उपचार, प्राकृतिक-चिकित्सा व योग की मानसोपचार में उपयोगिता, तनाव कम करने व मन की शांति के उपाय, पंचशील, विपश्यना-ध्यान साधना : इतिहास एवं विधि और उसका महत्त्व, बर्नर मैकफेडन के अनुसार स्वास्थ्यप्रद दिनचर्या, अर्नाल्ड इहरिट का जीवन-सूत्र, श्लेष्मा-विहीन भोजन।

जीवनीशक्ति, बलशक्ति और जीवन-शक्ति में अन्तर, जीवनीशक्ति व कार्य-क्षमता में वृद्धि के उपाय।

रोग और उनकी चिकित्सा -

प्राकृतिक-चिकित्सा-विधि व अन्य पद्धतियों में अन्तर।

रोग, इसका स्वरूप व कारण, तीव्र, जीर्ण व घातक रोग, पुराने रोग किसे कहते हैं ?

जीर्ण रोगों का इलाज, कार्यक्रम, भोजन-क्रम, चिकित्सा-काल में कमजोरी।

उभार, तीव्र रोग व उभार में अन्तर, प्राकृतिक-चिकित्सक की दृष्टि में उभार का महत्त्व, उभार का समय।

शरीर के लिए पंच महाभूतों अर्थात् मिट्टी, पानी, अग्नि (धूप) हवा व आकाश का महत्त्व।

रोग के समय व्यक्तिगत व सामुदायिक स्वच्छता का महत्त्व, बाल-रोगों का मूल कारण।

निम्नलिखित रोगों के कारण, लक्षण और उपचार -

दमा, लेरिंजाइटिस, सर्दी-जुकाम, एडेन्वायड्स, खांसी, गला बैठना, पायरिया, सिरदर्द, न्यूराल्जिया, कब्ज, बवासीर, वायु-विकार, चुन्ना, पुराना आंव, मधुमेह, कोलाइटिस, दुबलापन, मोटापा, गैसट्राइटिस, प्रदर, पेप्टिक अल्सर, अपेंडिसाइटिस, खाज, बांझपन, न्यूरेस्थेनिया, गठिया, पीलिया, अनिद्रा, रक्तचाप, एलर्जी, स्लिप डिस्क, सिआटिका, अनीमिया, एक्जिमा, आंतों की दुर्बलता, मानसिक दुर्बलता, लंबैगो, कमर का दर्द, अम्लपित्त, आमाशय का घाव, वीर्य विकार, स्वप्नदोष, नपुंसकता, हिस्टीरिया, आंखों की कमजोरी, गर्भाशय-स्थानभ्रष्टता, सरवाईकल स्पांडीलाइटिस, प्रोस्टेट ग्लैंड की सूजन, श्वेतकुष्ठ।

परीक्षा -

परीक्षा में कुल तीन प्रश्न-पत्र होंगे। प्रथम प्रश्न-पत्र, द्वितीय प्रश्न-पत्र तथा तृतीय प्रश्न-पत्र के निर्धारित विषय निम्नलिखित तालिका में निर्दिष्ट हैं। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए उत्तर की अवधि तीन घंटे की होगी।

तीनों ही प्रश्न-पत्रों में अलग-अलग उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम प्राप्तांक ५० प्रतिशत होगा। ५० प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त होने पर द्वितीय श्रेणी और ६० प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त होने पर प्रथम श्रेणी दी जायेगी। विशिष्टता प्राप्त करने के लिए ७५ प्रतिशत या अधिक अंक अपेक्षित हैं।

लिखित परीक्षा	विषय	पूर्णांक	समय
प्रथम प्रश्न-पत्र	प्राकृतिक चिकित्सा का इतिहास, शरीर शास्त्र निदान, भोजन शास्त्र तथा उपवास चिकित्सा	१००	३ घण्टे
द्वितीय प्रश्न-पत्र	जलोपचार, मालिश तथा व्यायाम, सूर्य तथा मृत्तिका चिकित्सा, मानसोपचार	१००	३ घण्टे
तृतीय प्रश्न-पत्र	रोग और उसकी चिकित्सा	१००	३ घण्टे

- **समग्र मौखिक परीक्षा में छह विषय होंगे। इन विषयों में परीक्षकों के अंकों का विवरण :**

प्राकृतिक चिकित्सा सिद्धान्त व व्यवहार	३०	पैथोलाजी	१०
व्यायाम, योगासन, प्राणायाम	२०	प्राकृतिक चिकित्सा विधियां	१०
शरीर रचना व क्रिया विज्ञान	२०	चिकित्सीय दक्षता व चिकित्सालय संचालन	१०

कुल अंक - १००

वस्तुनिष्ठ परीक्षा प्रत्येक शनिवार को ११ बजे से ११.२५ तक होगी।

प्रश्न-पत्र	विषय	पूर्णांक	समय
प्रथम प्रश्न-पत्र	जलोपचार व मृत्तिकोपचार	३०	२५ मिनट
द्वितीय प्रश्न-पत्र	भोजन व कल्प	३०	२५ मिनट
तृतीय प्रश्न-पत्र	मालिश तथा व्यायाम	३०	२५ मिनट
चतुर्थ प्रश्न-पत्र	मानसोपचार	३०	२५ मिनट
पंचम प्रश्न-पत्र	रोग और चिकित्सा	३०	२५ मिनट

नोट : वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्राप्तांकों का ५० प्रतिशत अंक प्रशिक्षणार्थी के कुल प्राप्तांकों में जोड़ा जायेगा।
मौखिक परीक्षा (प्राकृतिक-चिकित्सा-विधियाँ) प्रत्येक शुक्रवार को १० बजे से ११ बजे के बीच सम्बन्धित चिकित्सा-कक्षों में होगी, जिसका विवरण इस प्रकार है :

विषय	अंक		विषय	अंक
मिट्टी की पट्टी व पेट की गरम ठण्डी सेंक, सर्वांग मिट्टी लेप	१५		पैर का गरम नहान, उष्ण नहान	१५
एनिमा, डूश	१५		भाप नहान, स्थानीय भाप	१५
गरम ठण्डा कटि-स्नान, रीढ़ स्नान, मेहन स्नान ठण्डा घर्षण कटि-स्नान	१५		मालिश, स्पंज	१५
			थर्मोल्यूम, सारे बदन की गीली पट्टी	१५

कुल अंक - १०५

व्यावहारिक ज्ञान पुस्तिका

पैथालाजी की पुस्तिका	२५		रोगी-विवरण-पुस्तिका	२५
प्राकृतिक उपचार-पुस्तिका	२५		उपस्थिति, व्यवहार	२०

कुल अंक - ९५

प्रयोगात्मक प्राकृतिक-चिकित्सा एवं व्यावहारिक ज्ञान-पुस्तिका का अंक-योग - २०० है। इसका १२.५ प्रतिशत अंक प्रायोगिक परीक्षा का होगा।

पाठ्य पुस्तकें-

प्रथम प्रश्न-पत्र के लिए

(अ) प्राकृतिक-चिकित्सा का इतिहास
रोगों की सरल चिकित्सा, यूरोप यात्रा, कश्मीर में पन्द्रह दिन, विट्ठलदास मोदी होने का अर्थ, यादें।

(आ) शरीर-शास्त्र
शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान।

(इ) निदान
आकृति से रोगों की पहचान, नीरोग होने का सच्चा उपाय।

(ई) भोजन-शास्त्र तथा उपवास चिकित्सा-
आदर्श आहार, आहार चिकित्सा, कच्चा खाने की कला, दुग्ध कल्प, उपवास से लाभ, उपवास चिकित्सा, स्वास्थ्य के लिए फल-तरकारियाँ।

द्वितीय प्रश्न-पत्रके लिए

(अ) जलोपचार-
जल-चिकित्सा, प्राकृतिक जीवन की ओर।

(आ) मालिश तथा व्यायाम-
योगासन, तन्दुरुस्त कैसे रहें, सुगठित शरीर, वैज्ञानिक मालिश।

(इ) सूर्य तथा मृत्तिका-चिकित्सा-
प्राकृतिक जीवन की ओर।

(ई) **मानसोपचार–**

जीने की कला, उठो, आत्मदर्शन, जागे पावन प्रेरणा।

तृतीय प्रश्न-पत्र के लिए

रोग और उसकी चिकित्सा–

रोगों की नई चिकित्सा, रोगों की सरल चिकित्सा, बच्चों का स्वास्थ्य और उनके रोग, स्वास्थ्य कैसे पाया, सर्दी–जुकाम–खाँसी, आरोग्य की कुंजी, अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा, दैनन्दिन रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा, पुराने रोगों की गृह चिकित्सा, रोगों की अचूक चिकित्सा, सुखमय बुढ़ापा।

पाठ्यक्रम से सम्बन्धित उपर्युक्त पुस्तकों के अलावा 'आरोग्य' के नये–पुराने अंक भी विद्यार्थियों के लिए विशेष उपयोगी होंगे।

इस दृष्टि से कम–से–कम सम्बन्धित सत्र के लिए 'आरोग्य' का ग्राहक बने रहना अत्यन्त अनिवार्य है, अन्यथा नामांकन निरस्त माना जायेगा।

व्यावहारिक ज्ञान लेने और परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद डिग्री दी जायेगी। परीक्षा–फल तथा अन्य सूचनाओं का प्रकाशन केवल 'आरोग्य' में होगा।

उच्च प्रशिक्षण कोर्स :

गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स से एन०डी० परीक्षा उत्तीर्ण विद्यार्थी छह मासीय उच्च प्रक्षिक्षण कोर्स (जिसमें सैद्धान्तिक व व्यावहारिक प्राकृतिक–चिकित्सा का उच्च ज्ञान एवं प्राकृतिक–चिकित्सालय के संचालन का व्यावहारिक प्रक्षिक्षण दिया जाता है) के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस कोर्स के लिए स्थान सीमित है। अत:, आवेदन पर पूर्णत: विचार करने के बाद ही चयन किये गये प्रत्याशी को इस कोर्स में शामिल होने की स्वीकृति प्रदान की जायेगी।

वाई०डी० (डाक्टर ऑव योग) उपाधि

वाई०डी० (डाक्टर ऑव योग) प्रमाण–पत्र प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान प्रत्येक वर्ष दिसम्बर में दिया जायेगा। व्यावहारिक (ज्ञान) प्रशिक्षण की अवधि चार सप्ताह की होगी। १ दिसम्बर से २८ दिसम्बर की अवधि में ही लघु–उत्तरीय, लिखित तथा मौखिक परीक्षायें होंगी।

लघु–उत्तरीय परीक्षा प्रत्येक सप्ताह ११.०० बजे से ११.२५ बजे तक होगी।

प्रश्न–पत्र	विषय	पूर्णांक	समय
प्रथम प्रश्न–पत्र	अष्टांग योग, परिभाषा	२५	२५ मिनट
द्वितीय प्रश्न–पत्र	आसन व प्राणायाम	२५	२५ मिनट
तृतीय प्रश्न–पत्र	मुद्रा, बंध एवं चक्र	२५	२५ मिनट
चतुर्थ प्रश्न–पत्र	षट्कर्म	२५	२५ मिनट

लिखित परीक्षा दिनांक २७, २८ दिसम्बर को होगी। मौखिक परीक्षा, लिखित परीक्षा पूर्व घोषित तिथि के अनुसार होगी। मौखिक परीक्षा की तिथि लिखित परीक्षा के पूर्व ही घोषित की जायेगी।

प्रश्न–पत्र	विषय	पूर्णांक	समय
प्रथम प्रश्न–पत्र	योग दर्शन, परिभाषा एवं इतिहास	१००	३ घंटा
द्वितीय प्रश्न–पत्र	आसन, प्राणायाम, मुद्राबंध, चक्र एवं षट्कर्म	१००	३ घंटा
तृतीय प्रश्न–पत्र	शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान	१००	३ घंटा

प्रायोगिक एवं मौखिक परीक्षा कुल १०० अंकों की होगी।

आवास-

प्रशिक्षण-कालमें विद्यार्थियों के लिए आराम और सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया है। कमरे में सात फुट ऊंचा एक दरवाजा और ७१/२'X५' और ५'X५' की दो खिड़कियां हैं। कमरे और खिड़कियों की बनावट ऐसी वैज्ञानिक है कि गर्मी हो या बरसात, कमरे में कभी हवा की कमी नहीं होती। कमरों में पंखे भी हैं।

प्रत्येक कमरे के साथ सामान रखने की अलग कोठरी भी है, जिसमें तीन छोटी आलमारियां और कपड़े टांगने की व्यवस्था है। कमरे में संलग्न बड़े स्नानघर में हाथ-मुंह धोने के बेसिन, शौचालय-समेत सुविधा के सभी आधुनिक साधन हैं।

आरोग्य मंदिर में हर जगह सुहावने प्रकाश की व्यवस्था है। कमरों में विशेष रूप से रिफ्लेक्टेड लाइटिंग का प्रबंध किया गया है, जो आंखों को बहुत आराम पंहुचाता है। कमरों के रंग भी आंखों के लिए सुखकर हैं।

कमरों के सामने १० फुट चौड़ा और २५० फुट लंबा दालान है जिसमें जाड़े के दिनों में मीठी धूप फैली रहती है और गर्मियों में सूर्य के उत्तरायण होने पर छाया रहती है, जो दालान और कमरों को गर्म होने से बचाती और हवा ठंडी रखती है।

आरोग्य मंदिर की चारों तरफ दूर-दूर तक खुले मैदान और हरे-भरे क्षेत्र हैं जिनसे यहां स्वच्छ और स्वास्थ्यप्रद हवा मिलती रहती है। भवन के सामने सुन्दर और सुगंधित पुष्पों का बड़ा-सा उद्यान है।

पुस्तकालय-

स्वास्थ्य-सम्बन्धी ज्ञान-वृद्धि के लिए पुस्तकालय है जिसमें प्राकृतिक-चिकित्सा पर महान् लेखकों द्वारा लिखी व अनुवादित पुस्तकें हैं। प्राकृतिक-चिकित्सा और अन्य विषयों के पत्र आदि भी आते हैं।

भोजनालय-

भोजन का कमरा, प्रशस्त, सुंदर, साफ और हवादार हैं जिसमें आप टेबिल-कुर्सी पर अलग-अलग बैठ कर भोजन कर सकते हैं। भोजनालय में ताजा और सजीव भोजन ही दिया जाता है। दूध, दही, घी आदि का प्रबंध आरोग्य मंदिर व्यवस्था के ही अन्तर्गत है।

व्याख्यान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हाल-

स्मृतिशेष महान् प्राकृतिक चिकित्सक (स्व०) कृष्णम् राजू के नाम पर, आरोग्य मंदिर भवन की प्रथम मंजिल पर बना विशाल, भव्य **कृष्णम् राजू हाल** है, जिसमें विद्यार्थिगण (छात्र-छात्राएं) अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा अथवा कला, जैसे-गीत-संगीत, नृत्य, वाद्य वादन, अभिनय, काव्यपाठ आदि का प्राभ्यास, प्रदर्शन व कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इसी में विद्यार्थियों के लिए गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स के व्याख्याताओं एवं आमंत्रित प्राकृतिक-विशेषज्ञों का व्याख्यान होता है।

उपचार-

दो हजार वर्गफीट में स्त्रियों एवं पुरुषों के लिए अलग-अलग बने हुए बड़े हाल छोटे-बड़े कमरों में विभाजित हैं, जो विभिन्न उपचारों, जैसे-कटि-स्नान, वाष्प-स्नान, सारे शरीर की गीली पट्टी, गरम पाद-स्नान, रीढ़-स्नान, उष्ण स्नान, मालिश, एनिमा आदि के लिए निर्धारित हैं, जहां विद्यार्थियों को प्राकृतिक उपचार के प्रयोग दिखलाये, बताये और कराये जाते हैं।

मनोरंजन-

चारों तरफ हरे-भरे पेड़ों से घिरे, २३० मी० लम्बे परिभ्रमण-पथ पर नंगे पैर टहलने तथा बीच में स्थित खेल-प्रांगण में क्रिकेट, फुटबाल आदि खेलने की पूरी सुविधा है। विद्युत-प्रकाश-सुविधा-युक्त कोर्ट व टेबिल टेनिस मेज भी उपलब्ध हैं। अवकाश के क्षणों में ही टी०वी०, कैरम, शतरंज, बैडमिण्टन आदि के उपयोग की अनुमति है। छात्रावास से ठीक सटे **आरोग्य मंदिर पोस्ट आफिस** तथा परिसर में ही **पी०सी०ओ०** की सुविधा सुलभ है। छात्रावास के बिल्कुल पास ही स्टेट बैंक, पी.एन.बी., एच.डी.एफ.सी., यूनियन बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा के ए.टी.एम. एवं यूनियन बैंक, आन्ध्रा बैंक, पी.एन.बी., सेन्ट्रल बैंक की शाखायें हैं। दैनिक उपयोग की वस्तुओं के लिए कई अच्छी दुकानें व शापिंग काम्प्लेक्स भी हैं।

प्रशिक्षण-कालीन नियम-

व्यावहारिक प्रशिक्षण के समय प्रशिक्षणार्थियों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना अनिवार्य है। नियमों के प्रतिकूल आचरण दंडनीय है।

- प्रशिक्षण-अवधि में कोई भी अवकाश नहीं दिया जायेगा। विशेष परिस्थितियों में प्राचार्य से अवकाश स्वीकृत करा कर ही संस्थान से बाहर जाया जा सकता है।
- आरोग्य मंदिर में किसी प्रकार की नशीली वस्तु का सेवन पूर्णत: वर्जित है।
- प्रात: जागरण सूर्योदय से पूर्व व शयन-काल रात्रि १०.०० बजे से है।
- प्रशिक्षण-काल में पारस्परिक विवाद को अनपेक्षित आचार माना जायेगा।
- संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं स्वास्थ्यकर्मियों के साथ सौम्य व्यवहार अपेक्षित है।
- प्रशिक्षण-काल में वेशभूषा और आचरण श्रेष्ठ संस्कृति के अनुरूप हो।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देशभक्ति, क्षेत्रीय संस्कृति, स्वस्थ मनोरंजन एवं प्राकृतिक-चिकित्सा से संबंधित प्रासंगिक एवं संदेशपूर्ण प्रस्तुतियां ही अपेक्षित हैं।
- छात्रायें छात्रों के कमरे में और छात्र छात्राओं के कमरे में न जायें। प्रशिक्षणार्थी (पुरुष व महिलायें) रात्रि में ९.०० बजे तक अपने-अपने कमरे में अवश्य चलें जायें।
- प्रशिक्षणार्थिगण स्वास्थ्यार्थियों को अनावश्यक दिशा-निर्देश अथवा चिकित्सा-परामर्श न दें।
- प्राचार्य, आवश्यकता समझने पर, बिना कोई पूर्व सूचना दिये, नामांकन (एडमिशन) निरस्त कर सकते हैं।
- किसी भी तरह का वाद गोरखपुर क्षेत्र के न्यायालयाधीन ही रहेगा।

प्रशिक्षण-कालीन दिनचर्या-

५ बजे से ६ बजे तक	–	प्रात: जागरण/नित्यकर्म
६ बजे से ७ बजे तक	–	टहलना/वायु-सेवन
७ बजे से ८ बजे तक	–	व्यायाम
८ बजे से ९ बजे तक	–	विश्राम/अल्पाहार
९ बजे से ११.३० बजे तक	–	प्राकृतिक-चिकित्सा-विधि-प्रशिक्षण
१२ बजे से १ बजे तक	–	भोजन
१ बजे से २ बजे तक	–	विश्राम/स्वाध्याय
२ बजे से ४ बजे तक	–	सैद्धान्तिक कक्षाएं
४ बजे से ५ बजे तक	–	योगासन-प्रशिक्षण
५ बजे से ६ बजे तक	–	व्यावहारिक पैथालाजी
६ बजे से ८ बजे तक	–	विश्राम
८ बजे से ९ बजे तक	–	भोजन
९ बजे से १० बजे तक	–	स्वाध्याय
१० बजे से	–	शयनकाल आरंभ

शिक्षकगण-

डा० विमल कुमार मोदी, बी०एस-सी०, एम०बी०बी०एस०, डी०एम०आर०डी०, एम०डी०,एन०डी०,वाई०डी०।

डा० स्मिता मोदी, एम०बी०बी०एस०, एम०एस०, एन०डी०, वाई०डी०।

डा० विनीत शर्मा, एम०एस-सी०, एन०डी०, वाई०डी०।

डा० राहुल मोदी, एम०बी०बी०एस०, डी०वाई-एड०, सर्टिफिकेट-इन-वेदान्त, एम०एल०काम०(लंदन)।

डा० ऋचा मोदी, एम०बी०बी०एस०, एम०एस०।

डा० पीयूष पाणि पाण्डेय, बी०पी०टी०, डी०वाई०एम०।

पुस्तक सूची-

१. विट्ठलदास मोदी होने का अर्थ-डा० कान्तिकुमार
२. यादें- श्री विट्ठलदास मोदी
३. सुखमय बुढ़ापा- श्री विट्ठलदास मोदी
४. रोगोंकी सरल चिकित्सा-श्री विट्ठलदास मोदी
५. स्वास्थ्यके लिए फल-तरकारियां-सं०-श्री विट्ठलदास मोदी
६. योगासन-श्री आत्मानंद
७. दुग्ध-कल्प-श्री विट्ठलदास मोदी
८. उठो-स्वामी कृष्णानंद
९. जल-चिकित्सा-फादर क्नाइप
१०. बच्चोंका स्वास्थ्य और उनके रोग-सं० श्री विट्ठलदास मोदी
११. आहार-चिकित्सा-श्री अर्नाल्ड इहरिट
१२. आदर्श आहार-डा० सतीशचन्द्र दास
१३. उपवाससे लाभ-श्री विट्ठलदास मोदी
१४. कच्चा खाने की कला-डा० सत्य प्रकाश
१५. सर्दी, जुकाम, खाँसी-डा० रैस्मस अल्सेकर
१६. रोगोंकी नयी चिकित्सा-श्री लुई कूने
१७. जीनेकी कला-श्री विट्ठलदास मोदी
१८. यूरोप यात्रा-श्री विट्ठलदास मोदी
१९. स्वास्थ्य कैसे पाया- सम्पादक-श्री विट्ठलदास मोदी
२०. प्राकृतिक जीवन की ओर-श्री एडोल्फ जस्ट
२१. तंदुरुस्त कैसे रहें-श्री बर्नर मैकफेडन
२२. उपवास-चिकित्सा- श्री बर्नर मैकफेडन
२३. सुगठित शरीर-डा० चतुर्भुजदास मोदी
२४. कश्मीर में पन्द्रह दिन-श्री विट्ठलदास मोदी
२५. आस्टियोपैथी : सिद्धान्त और व्यवहार-डा०कृष्ण मुरारी मोदी
२६. शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान-डा० विमल कुमार मोदी
२७. भगवान् बुद्ध:जीवन और दर्शन-ले० सिद्धातिस्स-अनु०-श्री विट्ठलदास मोदी
२८. नीरोग होने का सच्चा उपाय-डा० आर०टी०ट्राल
२९. आकृतिसे रोग की पहचान-डा०लुई कूने
३०. वैज्ञानिक मालिश-श्री सत्यपाल
३१. आरोग्य की कुंजी-म० गांधी
३२. अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा-डा० कुलरंजन मुखर्जी
३३. दैनन्दिन रोगों की प्राकृतिक चिकित्सा- डा० कुलरंजन मुखर्जी
३४. पुराने रोगों की गृह चिकित्सा-डा० कुलरंजन मुखर्जी
३५. आत्म-दर्शन- श्री सत्यनारायण गोयन्का
३६. जागे पावन प्रेरणा- श्री सत्यनारायण गोयन्का
३७. रोगों की अचूक चिकित्सा- डा० जानकी शरण वर्मा

सहायक पुस्तकें -

१. **प्राकृतिक आयुर्विज्ञान**- सं० डा० राकेश जिन्दल
२. **व्यावहारिक प्राकृतिक चिकित्सा**- डा० हेनरी लिंड्लहार, एम०डी०
३. **प्राकृतिक चिकित्सा : दर्शन एवं व्यवहार**- डा० हेनरी लिंड्लहार, एम०डी०
४. **Rational Hydrotherapy -** Dr. J.H. Kellogg, M.D.

: पुस्तक सूची में ऊपर की छब्बीस पुस्तकें विद्यार्थियों एवं 'आरोग्य' के ग्राहकों को २०% की छूट पर मिलेंगी। डाक खर्च अतिरिक्त।

पुस्तक प्राप्ति का पता-
आरोग्य मंदिर प्रकाशन
पो० आरोग्य मंदिर-२७३००३
गोरखपुर (उ०प्र०)
दूरभाष : २५००४६९, २५०९३८४

प्राचार्य डा० विमल कुमार मोदी : एक परिचय

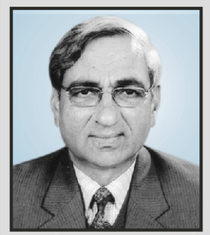

डा० विमल कुमार मोदी
(एम.बी.बी.एस., एम.डी., एन.डी., बाई.डी.)
संचालक : आरोग्य मंदिर
सम्पादक : 'आरोग्य' (मासिक)
प्रकाशक : आरोग्य मंदिर प्रकाशन
एवं प्राचार्य
गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स

गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स के प्राचार्य डा० विमल कुमार मोदी प्राकृतिक-चिकित्सा क्षेत्र में मौजूदा पीढ़ी के एक सशक्त एवं प्रतिभाशाली हस्ताक्षर हैं। सम्प्रति ये विश्वविख्यात प्राकृतिक-चिकित्सा केन्द्र, आरोग्य मंदिर के संचालक तथा प्रधान चिकित्सक है।

कीर्तिशेष प्रसिद्ध प्राकृतिक-चिकित्सक डा० विट्ठलदास मोदी के कनिष्ठ पुत्र डा० विमल कुमार मोदी का जन्म ११ फरवरी, १९५५ को हुआ था। इन्होंने प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा गोरखपुर में ही पायी। एन०ई० रेलवे स्कूल, गोरखपुर से हाई स्कूल की परीक्षा, महात्मा गांधी कालेज, गोरखपुर से इण्टर की परीक्षा तथा दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय से बी०एस-सी० तथा इसी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, गोरखपुर से एम०बी०बी०एस० की परीक्षा पास की। १९८८ में इन्होंने इसी मेडिकल कालेज से डी०एम०आर०डी० (रेडियोलाजी में डिप्लोमा) तथा १९९१ में एम०डी० (रेडियोलाजी) की परीक्षा पास की।

डा० विमल कुमार मोदीने पिताजी के आदर्शों का अनुसरण करते हुए, एलोपैथी के आकर्षण को तिलांजलि देकर, नेचुरोपैथी के प्रति पूरी निष्ठा एवं एकाग्रता के साथ अपने को समर्पित कर दिया और १९८० में ही डाक्टर ऑव नेचुरोपैथी (एन०डी०) की परीक्षा पास कर पिताश्री के चिकित्सा कार्य में सहायक बनकर, उनसे उनके विशाल अनुभव एवं ज्ञान प्राप्त कर प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली के अचूक चिकित्सक बन गये।

अपने शिक्षा क्रम में चिकित्सा विज्ञान से विधिवत् जुडे रहने के कारण डा० विमल रोगों के निदान एवं प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोगों को वैज्ञानिक आधार देकर चिकित्सा के वांछनीय परिणाम प्राप्त करने में अपनी एक पहचान बना चुके हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार-प्रसार तथा उसे अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए ये पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखते रहते हैं, प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी इनकी वार्त्ताओं का प्रसारण भी आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से होता रहता है तथा ये भारत के विभिन्न भागों एवं नेपाल में समय-समय पर आयोजित प्राकृतिक चिकित्सा के सम्मेलनों एवं संगोष्ठियों में मुख्य या विशिष्ट वक्ता के रूप में शामिल होते रहे हैं।

डा० विमल आरोग्य मंदिर से विगत ६९ वर्षों से प्रकाशित हो रहे प्राकृतिक चिकित्सा मासिक 'आरोग्य' के सम्पादक भी हैं।

चिकित्सार्थियों पर प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोगों को शीघ्र एवं पूर्णत: परिणामप्रद बनाने के लिए इन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली के साथ योग एवं ध्यान की वैज्ञानिक विधियों का समावेश भी किया है तथा प्राकृतिक चिकित्सा के मूलाधार से मेल नहीं खानेवाली कथित औषधिहीन उपचार परम्परा से अलग रखकर इन्होंने विशुद्ध प्राकृतिक चिकित्सा की एक पहचान बनायी है। ये गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थराप्यूटिक्स के माध्यम से हर वर्ष एन०डी० पाठ्यक्रम में सम्मिलित एवं सफल होनेवाले सत्तर-अस्सी छात्र-छात्राओं को प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में तैयार कर पितृऋण एवं लोकऋण चुका रहे हैं। डा० विमल को प्राकृतिक चिकित्सा से और प्राकृतिक चिकित्सा को डा० विमल से अनेकानेक अपेक्षाएं हैं।

सच्चा चिकित्सक वही है जो बिना किसी दवा के स्वयं नीरोग, स्वस्थ तथा सबल रहकर पूरे समाज को रोगमुक्त स्वस्थ एवं सबल बनाने में, सेवाभाव से, सहायक बने।
-गांधी

'आरोग्य'

(शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य-सम्बन्धी सर्वश्रेष्ठ मासिक समाचारपत्र)

विशेषताएं-

- **'आरोग्य'** गांधीजीके रचनात्मक कार्य-प्राकृतिक चिकित्सा का पोषक, सचित्र मासिक पत्र है।
- **'आरोग्य'** भोजन, कसरत, प्राकृतिक रहन-सहन आदिके बारेमें सही और महत्वपूर्ण जानकारी देता है।
- **'आरोग्य'** के लेख स्त्री, पुरुष और बच्चे सभीके लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं।
- **'आरोग्य'** बिना दवाके रोग-मुक्त होनेका सही रास्ता दिखाता है।
- **'आरोग्य'** स्वास्थ्यके संबंधमें सचेत करता है।
- **'आरोग्य'** में अपने विषयके विद्वानोंकी सारगर्भित रचनाएँ रहती हैं।
- **'आरोग्य'** ग्राहक को उसके जीवनभर 'आरोग्य' प्रतिमास मिलता रहता है।
- **'आरोग्य'** सन् १९४७ से प्रतिमास अपने ग्राहकोंके पास नियमित पहुँच रहा है।

वार्षिक-१२० रु०

दो वर्षका २३० रु०

तीन वर्षका ३४० रु०

आजीवन शुल्क १५०० रु०

क्या आप जीवन से निराश हो चुके हैं ?
समझ बैठे हैं कि आपका रोग जाने का नहीं, तो

प्राकृतिक चिकित्साका सहारा लीजिए

यह शरीर मिट्टी, पानी धूप और हवाका बना है और इन्हीं के समुचित प्रयोग से वह फिर नवीन हो सकता है। इसके अलावा, आरोग्यमंदिर में आपको प्राकृतिक चिकित्सा के साधन-जल, धूप, मिट्टी, वायु आसन, प्राणायाम, मालिश, उपवास, युक्त आहार की विधि करायी और बतायी जायेगी। सूर्यकिरण चिकित्सा, दुग्ध कल्प और विचार शक्ति के प्रयोग से भी आप परिचित होंगे। अपना स्वास्थ्य लौटाने के साथ-साथ अपने परिवारवालों और इष्ट मित्रों को प्राकृतिक साधनों द्वारा रोगमुक्त और स्वस्थ रहने की सलाह देने लायक हो जायेंगे।

सम्पर्क : संचालक, आरोग्य मंदिर

पो०-आरोग्य मंदिर-२७३००३, गोरखपुर (उ०प्र०)

फोन-९१-०५५१-२५००४६९, २५०९३८४, २५००८०५

E-mail : drvkmodi@gmail.com Web-www.arogyamandir.org

सूचना

गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स, आरोग्य मंदिर, गोरखपुर से एन०डी० (डॉक्टर ऑव नेचुरोपैथी) परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्ति अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। नियमावली एवं रजिस्ट्रेशन फार्म के लिए पचास रुपये के डाक टिकट के साथ अपने एन०डी० सर्टिफिकेट की फोटोस्टेट प्रतिलिपि भेजें।

रजिस्ट्रार

प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी संस्थान

आरोग्य मंदिर,

गोरखपुर-२७३००३

- एन०डी० (डाक्टर ऑव नेचुरोपैथी) का नामांकन-शुल्क (२५१ रु०) आवेदन-पत्र के साथ भेजा जाना चाहिए। व्यावहारिक ज्ञान का शुल्क ११,१०० रु० मासिक होगा। इसके अलावा आवासीय किराया २,००० रु० मासिक और भोजन में लगभग ३,००० रु० मासिक खर्च होगा। परीक्षा-शुल्क ५०१ रु० होगा।
- वाई०डी० (डाक्टर ऑव योगा) के सर्टिफिकेट के इच्छुक विद्यार्थियों को इसकी परीक्षा (वस्तुनिष्ठ, लिखित और मौखिक) का शुल्क अलग से देना होगा।

एन०डी० प्रवेश-पत्र

प्रधानाचार्य,
गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स
आरोग्य मन्दिर - २७३००३
गोरखपुर (उ०प्र०)

महोदय,

मैं पत्राचार द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा सीखना चाहता/चाहती हूं। एतदर्थ मुझे स्कूल में प्रवेशित करने की कृपा करें। प्रवेश शुल्क दो सौ इक्यावन रु० नकद/मनीआर्डर ड्राफ्ट सं०.....दिनांक.....द्वारा भेजे जा रहे हैं।

मैं ''आरोग्य'' का/की यथानिर्दिष्ट आजीवन ग्राहक हूं। मेरी 'आरोग्य' ग्राहक-संख्या.....है। मैं सम्बन्धित सत्र-तक, नियमित एवं निरन्तर, जब तक प्रमाण-पत्र नहीं मिल जाता, 'आरोग्य' पढ़ता रहूंगा/पढ़ती रहूंगी।

नाम ..... पिता/पति .....
उम्र ..... ऊंचाई ..... वजन .....
शिक्षा .....
व्यवसाय .....

.....
हस्ताक्षर

पता

.....
.....
.....
.....

यहाँ अपना पासपोर्ट
साइज फोटो लगायें

नोट: 'आरोग्य' का ग्राहक नम्बर जरूर लिखें। ग्राहक न हों, तो इसका आजीवन चंदा १५००/- रुपये भी साथ भेजें, अन्यथा प्रवेश-पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

Blank

योग प्रवेश-पत्र

प्रधानाचार्य,
गोरखपुर स्कूल ऑव नेचुरल थेराप्यूटिक्स
आरोग्य मन्दिर - २७३००३
गोरखपुर (उ०प्र०)

महोदय,

मैं पत्राचार द्वारा योग सीखना चाहता/चाहती हूं। एतदर्थ मुझे स्कूल में प्रवेशित करने की कृपा करें। प्रवेश शुल्क दो सौ इक्यावन रु० नकद/मनीआर्डर ड्राफ्ट सं०..दिनांक................................द्वारा भेजे जा रहे हैं।

मैं ''आरोग्य'' का/की यथानिर्दिष्ट आजीवन ग्राहक हूं। मेरी 'आरोग्य' ग्राहक-संख्या............................है। मैं सम्बन्धित सत्र-तक, नियमित एवं निरन्तर, जब तक प्रमाण-पत्र नहीं मिल जाता, 'आरोग्य' पढ़ता रहूंगा/पढ़ती रहूंगी। मेरा स्वास्थ्य योग-प्रशिक्षण के योग्य है। एतदर्थ मुझे योग-प्रशिक्षण में प्रवेशित करने की कृपा करें।

नाम .... पिता/पति ....
उम्र .... ऊंचाई .... वजन ....
शिक्षा ....
व्यवसाय ....

....
हस्ताक्षर

पता
....
....
....
....

यहाँ अपना पासपोर्ट
साइज फोटो लगायें

नोट: 'आरोग्य' का ग्राहक नम्बर जरूर लिखें। ग्राहक न हों, तो इसका आजीवन चंदा १५००/- रुपये भी साथ भेजें, अन्यथा प्रवेश-पत्र स्वीकार नहीं किया जायेगा।

Blank